बाल विकास के समाजीकरण में शिक्षा का योगदान

Meenu, **Research** Scholar, Baba Mastnath University, Rohtak

सार- समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति-रिवाज़, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है। जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपांतरण भी समाजीकरण के माध्यम से ही होता है। समाजीकरण के माध्यम से ही वह संस्कृति को आत्मसात् करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया मनुष्य को संस्कृति के भौतिक व अ-भौतिक रूपों से परिचय कराती है। सीखने की यह प्रक्रिया समाज के नियमों के अधीन चलती है। समाजशास्त्र की भाषा में कहें तो समाज में अपनी परिस्थिति या दर्जे के बोध और उसके अनुरूप भूमिका निभाने की विधि को हम समाजीकरण के जरिये ही आत्मसात् करते हैं। समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक रूप से क्रियाशील बनाता है। इसी के माध्यम से संस्कृति के अनुरूप आचरण करने का विवेक विकसित होता है। इसके लिए व्यक्ति द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों का जो अभ्यंतरीकरण किया जाता है वह समाजीकरण का ही रूप है।

मुख्य शब्द- समाज, समाजीकरण, संस्कृति, योगदान, विकास आदि।

I. परिचय

समाजीकरण के विश्लेषण और अध्ययन में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सीखने की प्रक्रिया में सामाजिक मानदण्डों व संस्कृति की सबसे ज़्यादा अहमियत होती है। इन्हें अस्वीकार कर जो कुछ सीखा जाता है, जैसे हत्या, चोरी या अन्य आपराधिक वारदातें करना, उन्हें समाजीकरण में नहीं गिना जाता बल्कि इनकी गिनती विपथगामी व्यवहार में होती है। इन्हें सीखने वाला व्यक्ति समाज की मुख्यधारा के विपरीत माना जाता है। वह समाज में सकारात्मक योगदान देने की अवस्था में भी नहीं रहता है। इन नकारात्मक क्रियाओं और आचरणों को प्रायः विफल समाजीकरण के उदाहरण की तरह देखा जाता है। इस प्रकार समाजीकरण व्यक्ति को समाज का सदस्य बना कर समाज की क्रियाओं में भाग लेने में समर्थ बनाता है। समाजीकरण की एक सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह जीवन-पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति की परिस्थिति व सामाजिक भूमिकाएँ बदलती रहती हैं और उनके अनुरूप व्यवहार के लिए उसे आचरण तथा व्यवहार के नये प्रतिमान सीखने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए बचपन में जहाँ बच्चा समाजीकरण के माध्यम से माता-पिता, संबंधियों व बुज़ुर्गों से व्यवहार करना सीखता है, वहीं युवावस्था में उसे नये सिरे से दफ्तर में अपने सहयोगियों, वरिष्ठों, पड़ोसियों आदि से व्यवहार के तौर-तरीकों को सीखना पड़ता है। यहाँ तक कि वृद्धावस्था में भी व्यक्ति नयी भूमिकागत अपेक्षाओं के अनुसार संबंधित सामाजिक व्यवहार ग्रहण करता है। इस प्रकार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक लगातार चलती रहती है।

II. समाजीकरण की परिभाषा:

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और अपना विकास करता है। समाज के बिना उसका विकास असंभव है तथा वह समाज की परम्पराओं, विचारों रहन सहन के तरीकों को अपनाता है । इस प्रकार से कहा जा सकता है यदि वह समाज के अनुसार अपना जीवन नही बीताता तो उसका समुचित विकास नहीं हो सकता। इस प्रकार वह समाज की परम्पराओं और मान्यताओं को अपनाकर ही सामाजिक बनता है । इस प्रकार समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जो बाल के जन्म के बाद शरू हो जाती है और जीवन भर सामाजिक गुणों को सीखने और उसे व्यवहार को ग्रहण करने में लगती है और वह सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने लगती है। इस प्रकार से यह एक प्रक्रिया जिसमें मानव समाज द्वारा सीखता है जो उसके आस पास समाज में दिखता है। अर्थातः एक व्यक्ति का समाजीकरण सामाजिक व्यवहार को सीखना है।

परिभाषा: जॉनसन के मतानुसार, " समाजीकरण एक प्रकार का सीखना है जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने योग्य बनाता है । ("Socialization is learning, that enables the learner to perform social role.") – H.M Johnson

बच्चे के समाजीकरण में शिक्षा का योगदान:

बच्चों के समाजीकरण में शिक्षा (अध्यापक) का विशेष योगदान होता है:

1. **व्यक्तित्व का विकास:** जब बच्चा स्कूल अथवा कॉलेज में दाखिला लेता है तो उस के बाद ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होने लगता है। यहाँ बच्चा बहुत से लोगों के सम्पर्क मे आता है जैसे शिक्षकों, मित्रों आदि द्वारा जैसे – वह अध्यापक तथा पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करता है। सीखता है इस प्रकार इन सभी द्वारा उसके समाजीकरण में सहायता मिलती है।
2. **अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान:** शिक्षा की मदद से बच्चा अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्य को जान जाता है और फिर वह अपने कर्तव्यों का पालन करने लगते है और अपने अधिकारों को समझ जाते है जिससे उसका समाजीकरण होता है।
3. **संस्कृति का ज्ञान:** शिक्षा द्वारा ही बच्चे अपनी संस्कृति अर्थात् अपनी रीति-रिवाजों, परम्पराओं, धार्मिक मान्यतओं आदि के बारे में जानते है। अतः संस्कृति भी बच्चों के समाजीकरण में बढ़ावा देती है।
4. **नियमों का पालन:** विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ वह विद्यालय द्वारा दिए गए नियमों का पालन करते है। यही नही इस कारण से वह अनुशासन में रहने लगते है जिससे बच्चों का समाजीकरण होता है।
5. **विभिन्न लोंगो से सम्पर्क:** स्कूल अथवा कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद विद्यार्थी अनेक लोगों के संपर्क में आता है इस प्रकार से अनेक लोगों से उसका सामाजिक संपर्क बन जाता है। स्कूल और कॉलेज समाजीकरण के मुख्य माध्यम है।

समाजीकरण में अध्यापक की भूमिका:

1. विद्यालय न केवल शिक्षा का एक औपचारिक साधन है, बल्कि यह बच्चे के समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करता है और विद्यालय के इस कार्य में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक अहम होती है।
2. परिवार के बाद बच्चों को विद्यालय में प्रवेश मिलता है। अध्यापक ही शिक्षा के द्वारा बच्चे में वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य पैदा करता है, जो समाज व संस्कृति में मान्य होते हैं।
3. स्कूल में खेल प्रक्रिया द्वारा बच्चे सहयोग, अनुशासन, सामूहिक कार्य आदि सीखते हैं। इस प्रकार, विद्यालय बच्चे में आधारभूत सामाजिक व्यवहार तथा व्यवहार के सिद्धान्तों की नींव डालता है।
4. समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करने के लिए शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य यह है कि वह बालक के माता-पिता से सम्पर्क स्थापित करके उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करे एवं उन्हीं के अनुसार उसे विकसित होने के अवसर प्रदान करे।
5. शिक्षक को चाहिए कि वह स्कूल में विभिन्न सामाजिक योजनाओं के द्वारा बालकों को सामूहिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान करे। इन क्रियाओं में भाग लेने से उसका समाजीकरण स्वत: हो जाएगा।

बालक के समाजीकरण में विद्यालय की भूमिका:

परिवार के बाद विद्यालय ही समाजीकरण की प्रक्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। विद्यालयों को ही नयी पीढ़ी की शिक्षा तथा समाजीकरण का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। विद्यालय केवल कौशल एवं तकनीकी शिक्षा ही नहीं प्रदान करते हैं बल्कि वे नयी पीढ़ी में सांस्कृतिक मूल्यों एवं विचारधाराओं का भी संचारण करते है। विद्यालयों की भी समाजीकरण में अहम् भूमिका होती है। इस दृष्टि से निम्नांकित पक्ष अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं -

विद्यालयों में शिक्षकों का वही महत्व है जो किसी भवन में नींव का होता है। किसी विद्यालय में कार्यरत शिक्षक जितना ही अधिक योग्य, कौशलयुक्त, विचारवान, सत्गुणी एवं मानवीय दृष्टिकोण वाले होंगे, वहाँ पढ़ने वाले बच्चों में वांछित गुणों के विकास की संभावना भी उतनी ही अधिक रहेगी। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में अध्यापकों का ही बच्चों पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। बच्चों एवं शिक्षकों के बीच स्थापित सम्बन्धों के स्वरूप का भी उनके समाजीकरण पर काफी प्रभाव पड़ता है। बच्चे आगे चलकर किस तरह का व्यक्तित्व विकसित करेंगे, उनमें किस तरह के गुणों के विकास की संभावना अधिक रहेगी, यह विद्यालयों के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु पर काफी निर्भर करता है। प्रायः देखा जाता है कि सार्वजनिक विद्यालयों की अपेक्षा धार्मिक संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों में पूर्वाग्रह, रूढ़धारणा, असुरक्षा तथा अन्य धर्मों के लोगों के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्तियाँ अधिक पाई जाती है। अतः विद्यालयों के पाठ्यक्रमों को मानवीय हितों को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

विद्यालयों में बच्चों के पठन-पाठन के साथ खेल-कूद तथा स्वस्थ मनोरंजन का अवसर भी प्रदान करना चाहिए। इससे उनमें सहयोग, प्रतिस्पर्धा एवं सहिष्णुता की भावना विकसित होगी और सामाजिक परिपक्वता बढ़ेगी। ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों का सर्वांगीण विकास सरलता से हो सकेगा।

विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रति अनुशासन की जो तकनीक प्रयुक्त की जाती है उसका भी उनके विकास तथा समाजीकरण पर प्रभाव पड़ता है। विद्वानों एवं शोधकर्ताओं का सुझाव है कि बच्चों को कठोर अनुशासन में नहीं रखना चाहिए। उनके प्रति मित्रवत् एवं सहानुभूति व्यवहार करना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों में वांछित गुणों को प्रोत्साहित करें। इसके लिए पुरस्कार तथा प्रशंसा लाभकारी है। इसके विपरीत दण्ड का प्रायः अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है। अत्यधिक दण्डात्मक कार्यवाही करने से बच्चों में प्रतिक्रियात्मक विचार पैदा हो सकते हैं और समाजीकरण की प्रक्रिया बाधित हो सकती है।

III. निष्कर्ष:

संक्षेप में हम कह सकते है कि बाल विकास में समाजीकरण के विभिन्न विभागों का प्रमुख योगदान रहा है जिसमे बच्चे के समाजीकरण विकास में शिक्षा, परिवार, माता-पिता का योगदान प्रमुख है। विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हुए बलाकों में बहुत से गुणों का विकास होता है। वे विभिन्न रीति रिवाजो, परम्पराओ, अधिकारों, कर्तव्य, भावनाओं आदि द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

IV. संदर्भ ग्रंथ सूची:

अकोलकर, वी.वी. : सोशल साइकोलॉजी, बाम्बे पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे, पृ. 126.

एच.एम. जानसन (1963), सोसियोलॅजी : अ सिस्टमेटिक इंट्रोडक्शन, रॉटलेज ऐंड कीगन पाल, लंदन.

के. डेविस (1960), ह्यूमन सोसाइटी, मैकमिलन, न्यूयॉर्क.

गिलिन, जे.पी. एण्ड गिलिन, जे.एल.: कल्चरल सोशियोलॉजी, पृ. 643

ग्रीन, ए.डब्ल्यू. (1956): सोशियोलॉजी जीः एड एनालिसस ऑफ लाईफ इन मार्डन सोसाइटी, मैकग्राहिल,पृ. 127.

जी.एच.मीड (1934), माइंड, सेल्फ़ ऐंड सोसाइटी, शिकागो युनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो.

पारसन्स, टी. : द स्ट्रक्चर ऑफ सोशल एक्शन, पृ. 149.

पार्सन्स ऐंड बेल्स (1960), फैमिली सोशलाइजेशन ऐंड इंटरेक्शन प्रासेसेज़, द फ़्री प्रेस, ग्लेनको इलीनॉय.

फिशर, जे.एन. (1957): सोशियोलाॅजी, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 22.

बोर्गाडस, ई.एस. : सोशियोलॉजी, पृ. 537.

रास, ई.ए. (1901): सोशल कन्ट्रोल, मैकमिलन, न्यूयार्क.

सिंह, जे.पी. (2006): समाजशास्त्र: अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त, पेंटिस हाल ऑव इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 82.

सिंह, जे.पी. (2006): समाजशास्त्र: अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त, पेंटिस हाल ऑव इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 82-83.

सी.एच. कूले (1922), ह्यूमन नेचर ऐंड द सोशल आर्डर, स्क्रिबनर, न्यूयॉर्क.